जून 2021

इंडस्ट्री स्पॉटलाइट संस्करण III

भारतीय कपड़ा और परिधान उद्योग

CRIF Together to the next level

sidbi

विश्लेषकों के संपर्क

विपुल जैन
वाइस प्रेसिडेंट, हेड ऑफ प्रोडक्टस

vipul.jain@crifhighmark.com

सुभ्रांशु चट्टोपाध्याय
सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, नेशनल हेड – सेल्स

subhrangshu.chattopadhyay@crifhighmark.com

राकेश राल्लापल्ली
असोसिएट वाइस प्रेसिडेंट,, रिसर्च एंड इनसाइट्स

rakesh.rallapalli@crifhighmark.com

सौम्य साह
एनालिस्ट, रिसर्च एंड इनसाइट्स

saumya.sah@crifhighmark.com

कैलाश चंद्र भानू मुख्य महाप्रबंधक,
आर्थिक अनुसंधान और आंकडें विश्लेषण उद्भाग

bhanoo@sidbi.in

आर. प्रभावती, उप महाप्रबंधक,
आर्थिक अनुसंधान और आंकडें विश्लेषण उद्भाग

rprabha@sidbi.in

सोहम नाग
प्रबंधक, आर्थिक अनुसंधान और आंकडें विश्लेषण उद्भाग

sohamnag@sidbi.in

विषय सूची

क्रम सं	विवरण	पृष्ठ सं
01	भारतीय कपड़ा एवं परिधान उद्योग	01
02	कार्यपालक सारांश	01
03	प्रस्तावना और वर्तमान बाजार परिदृश्य	02
04	कपड़ा एवं परिधान उद्योग का परिदृश्य	04
04.1	संविभाग और एनपीए रुझान	04
04.2	वित्तपोषण का स्वरूप - बाजार का अंश	05
04.3	कपड़ा एवं परिधान - उधारकर्ता परिदृश्य	07
04.4	एमएसएमई उधारकर्ता घटक में एनपीए रुझान	08
04.5	एमएसएमई उधारकर्ता घटक में उधार के रुझान	08
04.6	भारत के कपड़ा एवं परिधान क्षेत्र	10
04.7	निर्यात ऋण परिदृश्य	12
05	कपड़ा एवं परिधान उद्योग के लिए आगे की राह	13
06	अस्वीकरण	16
07	सीआरआईएफ इंडिया के बारे में	16
08	सिडबी के बारे में	16

भारतीय कपड़ा एवं परिधान उद्योग

कार्यपालक सारांश

भारत में कपड़ा और परिधान उद्योग अर्थव्यवस्था के सबसे पुराने और सबसे बड़े क्षेत्रों में से एक है, जो देश की विकास के लिए महत्वपूर्ण है। भारत वस्त्रों के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी है और इसके पास धागे से लेकर परिधानों तक की संपूर्ण विनिर्माण मूल्य श्रृंखला है, जो किसानों से लेकर अंतिम उपयोगकर्ताओं तक कई लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित करती है। इस क्षेत्र में सभी आकार के व्यापारी हैं, बड़े कॉरपोरेट्स से लेकर सूक्ष्म संस्थाओं तक और पूरे देश में यह समूहों में व्याप्त है। कपड़ा और परिधान उद्योग लगभग 4.5 करोड़ श्रमिकों को सीधे और अन्य 6 करोड़ को संबद्ध गतिविधियों में रोजगार प्रदान करता है।[1]

क्षेत्र का पर्यावलोकन

कुल बाजार आकार INR 10.26 लाख करोड़ जिसमें रु.7.31 लाख करोड़ घरेलू खपत और रु. 2.95 लाख करोड़ निर्यात (हस्तशिल्प सहित)[2] शामिल हैं।.

विश्व स्तर पर 5वां सबसे बड़ा निर्यातक है, भारत की निर्यात आय में 12% और सकल घरेलू उत्पाद में 2% का योगदान देता है।

घरेलू बाजार वर्ष 2024[3] तक बढ़कर 8.77 लाख करोड़ रुपये होने का अनुमान है।

ऋण का आकार

दिसंबर 2020 तक प्राप्त किए गए क्रेडिट की कुल राशि (क्रेडिट मूल्य[4]) रु. 162 हजार[5] करोड़ है।

मार्च 2020 से लॉकडाउन के कारण वर्षानुवर्ष 20% की गिरावट।

परिमाण [6] या सक्रिय ऋणों की संख्या के अनुसार, दिसंबर 2020 तक यह क्षेत्र 426.53 हजार था

ऋण संविभाग की स्थिति

दिसंबर 2020 में एनपीए 16.92% था, जो तिमाही दर तिमाही 0.94% की दर से बढ़ते हुए दिसंबर 2019 की तुलना में 8% कम था।

पिछले 2 वर्षों में हर तिमाही में एनपीए में गिरावट, सितंबर 2018 में 29.59% से सितंबर 2020 में 15.98% हो गई

निर्यात ऋण संवृद्धि

दिसंबर 2020 तक निर्यात ऋण रु9 हजार करोड़ था,जो कुल निर्यात ऋण राशि से वर्ष दर वर्ष 25% कम रहा और दिसंबर 2020 की पिछली तिमाही की तुलना में इसमें 8.27% की कमी देखी गई।

इस क्षेत्र को दिए गए ऋणों की कुल संख्या का 95% एमएसएमई उधारकर्ता घटक में केंद्रित है

दिसंबर 2020 तक 5 लाख उधारकर्ता दिसंबर 2020 तक एमएसएमई उधारकर्ता घटक को कुल ऋण (क्रेडिट मात्रा) का 95% और ऋण की कुल राशि (क्रेडिट मूल्य) का लगभग 50% है।

दिसंबर 2020 तक सूक्ष्म उधारकर्ताओं को ऋणों का परिमाण (ऋणों की संख्या) का 76.7% थी।

एसएमई (लघु और मध्यम उधारकर्ता) घटक में ऋणों के परिमाण (ऋणों की संख्या) का 18.7% हिस्सा है।

कुल ऋण संविभाग का 80% शीर्ष 13 कपड़ा और परिधान क्षेत्रों में है

पूरे देश के बुक साइज के 25% पर महाराष्ट्र का सबसे बड़ा संविभाग है

शीर्ष 13 क्षेत्रों में एमएसएमई उधारकर्ता घटक का कुल ऋण मूल्य (ऋण की राशि) का 46.8% हिस्सा है

1 कपड़ा मंत्रालय, वार्षिक रिपोर्ट 2019-20

2 कपड़ा और परिधान उद्योग : द चेंज एजेंट ऑफ इंडिया, इन्वेस्ट इंडिया, 1 USD = INR 73.13 पर USD Bn से INR करोड़ में परिवर्तित आंकड़े

3 भारतीय कपड़ा उद्योग परिसंघ (CITI) द्वारा जारी आंकड़े, USD Bn से INR करोड़ में 1 USD = INR 73.13 पर परिवर्तित आंकड़े

4 मूल्य, क्रेडिट के संदर्भ में, इस पूरी रिपोर्ट में रुपए के मूल्य या करोड़ रुपए में ऋण की राशि को संदर्भित करता है

5 इस पूरी रिपोर्ट में 'के' के आंकड़े 'हजारों' को संदर्भित करते हैं

6 परिमाण, क्रेडिट के संदर्भ में, इस पूरी रिपोर्ट में, लागू होने वाले सक्रिय/संवितरित ऋणों की संख्या को संदर्भित करता है t

प्रस्तावना और वर्तमान बाजार परिदृश्य

भारतीय कपड़ा और परिधान उद्योग भारत के सबसे पुराने उद्योगों में एक है, जो विशेष रूप से घरेलू लघु उद्योग से दुनिया में सबसे बड़े उद्योगों में से एक के रूप में विकसित हुआ है। यह क्षेत्र आज अर्थव्यवस्था में उत्पादन, विदेशी मुद्रा आय और रोजगार के मामले में अत्यधिक योगदान देता है।

देश के औद्योगिक उत्पादन में 7% का योगदान देता है

देश के सकाल घरेलू उत्पाद में 2% का योगदान देता है

देश की निर्यात आय में 12% का योगदान देता है

लगभग 45 मिलियन कर्मचारी और अन्य 6 करोड़ कर्मचारी संबद्ध उद्योगों से जुड़े हैं

स्रोत : कपड़ा मंत्रालय, वार्षिक रिपोर्ट 2019-20

कच्चे माल के उत्पादन से लेकर तैयार उत्पादों की डिलीवरी तक यह एक आत्मनिर्भर क्षेत्र है, प्रसंस्करण के प्रत्येक चरण में पर्याप्त मूल्यवर्धन होता है। उद्योग में ज्यादातर छोटे पैमाने पर, गैर-एकीकृत कताई, बुनाई और बिनाई, कपड़ा परिष्करण, और परिधान बनाने वाले उद्यम निम्नलिखित उत्पाद का उत्पादन करते हैं:

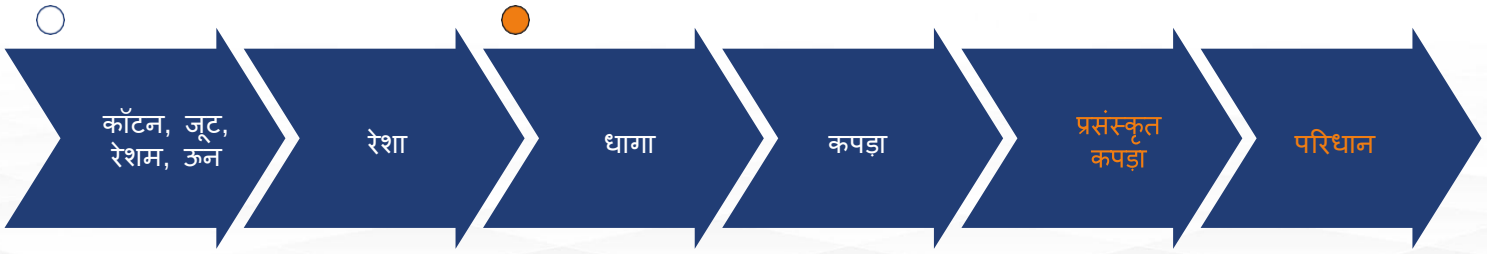

धागा और फाइबर क्षेत्र

ऊनी वस्त्र, सिल्क वस्त्र, जुट वस्त्र एवं तकनीकी वस्त्र

स्रोत: कपड़ा मंत्रालय, मेक इन इंडिया

स्रोत : टेक्सटाइल एंड अप्पारेल इंडस्ट्री, द चेंज एजेंट ऑफ इंडिया, इन्वेस्ट इंडिया

वैश्विक बाजार में बड़ी हिस्सेदारी और राष्ट्रीय राजकोष में इसके योगदान के बावजूद, इस क्षेत्र को हाल के दिनों में जीएसटी की शुरूआत के साथ बड़ी बाधाओं का सामना करना पड़ा, अन्य कम लागत पर विनिर्माण करने वाले देशों से आयात में वृद्धि हुई।

हाल ही में, कोविड-19 वैश्विक महामारी का कपड़ा और परिधान क्षेत्र सहित लगभग सभी विनिर्माण क्षेत्रों पर भारी प्रभाव पड़ा है। एक बड़े पैमाने पर असंगठित और श्रम प्रधान क्षेत्र, मार्च 2020 के अंत में सरकार द्वारा घोषित लॉकडाउन, मांग में अनिश्चितता, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, कच्चे माल की कीमतों में गिरावट और रोजगार की हानि और आजीविका के प्रभाव के कारण श्रमिकों ने रिवर्स माइग्रेशन के कारण इस क्षेत्र को छोड़ दिया।

जिस क्षेत्र को एक बार ~ 12% की सीएजीआर से बढ़कर 2025-26 [7] तक 16.08 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान लगाया गया था, कहा जाता है कि वित्त वर्ष 2020-21 में कम से कम 30% घटत के कारण वैश्विक स्तर पर बाजार का आकार 12-15 महीने की मंदी देखी गई है जिसके परिणामस्वरूप वित्त वर्ष 2020-21 की पहली तिमाही में बिक्री में गिरावट आई है ।

तथापि, फिर से बाजार सामान्य स्थिति के करीब आ गया है और विनिर्माण गतिविधियों में तेजी आई है, विशेषज्ञों का मानना है कि घरेलू बाजार में बहाली तेज होगी। घरेलू बाजार जो वर्तमान में 7.31 लाख करोड़ रुपये का है, 2024[8] तक 8.77 लाख करोड़ रुपये तक पहुंचने का अनुमान है।

7कपड़ा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी आंकड़ें

8भारतीय कपड़ा उद्योग परिसंघ (CITI) द्वारा जारी किया गए आंकड़ें, यूएसडी बिलियन से रुपए करोड़ में 1 यूएसडी = रु 73.13 में परिवर्तित आंकड़े

कपड़ा एवं परिधान उद्योग में ऋण परिदृश्य

संविभाग और एनपीए रुझान

कपड़ा और परिधान क्षेत्र ने चालू वित्त वर्ष की सभी तिमाहियों में ऋण की मांग में गिरावट देखी है, क्योंकि कोविड -19 संकट के कारण घरेलू और साथ ही वैश्विक बाजारों में व्यवधान उत्पन्न हुआ है।

चार्ट 1: दिसंबर 2020 तक की ऋण रेखा

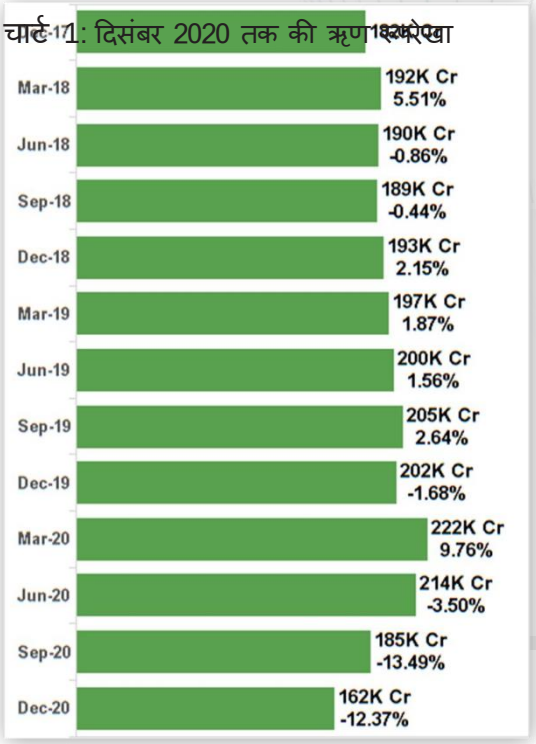

स्रोत: सीआरआईएफ ब्यूरो, भारत

162 हजार करोड़

मूल्य के अनुसार ऋण संविभाग

-3.81%

3-वर्ष सीएजीआर

-19.8%

वर्षानुवर्ष परिवर्तन

-12.3%

तिमाही दर तिमाही परिवर्तन

16.92% एनपीए

- 16.6 %

3-वर्ष सीएजीआर

-7.69 %

वर्षानुवर्ष परिवर्तन

0.94 %

तिमाही दर तिमाही परिवर्तन

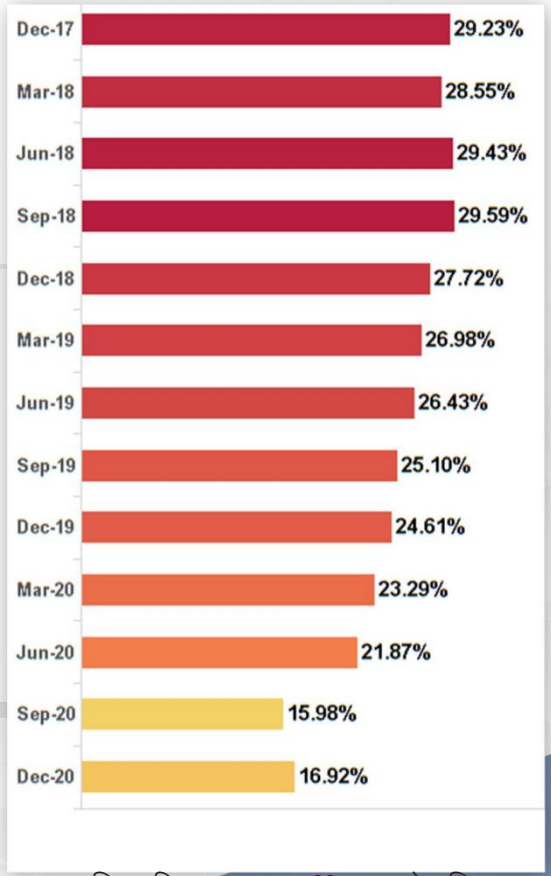

प्रतिशत विगत बकाया का 90 या उससे अधिक दिनों की अपचारिता को दर्शाता है

स्रोत:सीआरआईएफ ब्यूरो, भारत

वित्तपोषण स्वरूप - बाजार हिस्सेदारी

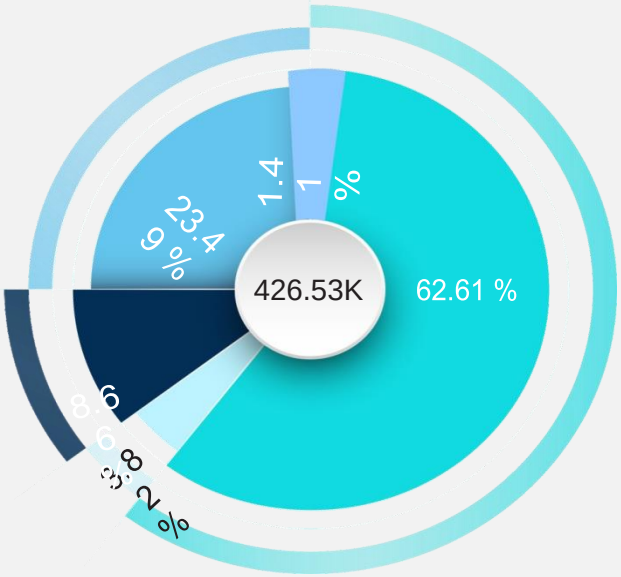

चार्ट 2ए: कपड़ा एवं परिधान – वित्तपोषण का स्वरूप (मूल्य के अनुसार बाजार हिस्सेदारी)

- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक
- एनबीएफसी
- विदेशी बैंक
- अन्य
- निजी बैंक

स्रोत:सीआरआईएफ ब्यूरो, भारत

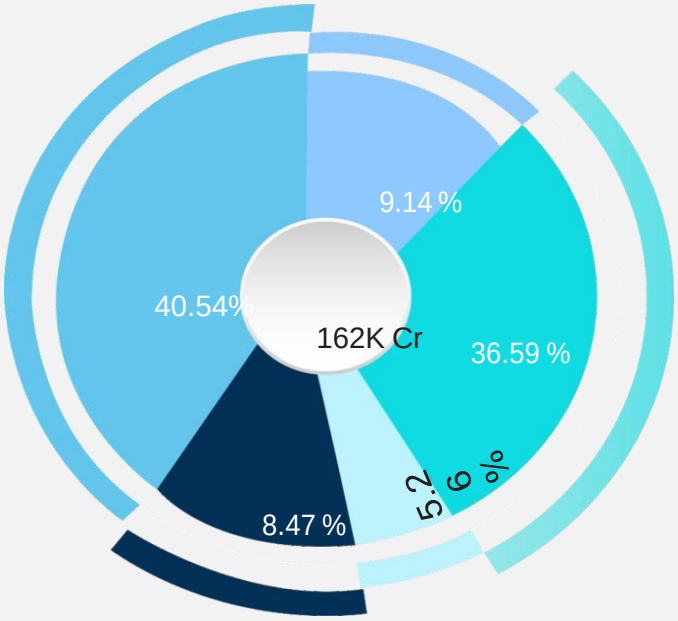

चार्ट 2ए: कपड़ा एवं परिधान – वित्तपोषण का स्वरूप (मूल्य के अनुसार बाजार हिस्सेदारी)

- सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक
- एन बी एफसी
- विदेशी बैंक
- अन्य
- निजी बैंक

स्रोत:सीआरआईएफ ब्यूरो, भारत

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा दिए ऋणों की संख्या (परिमाण अंश) का 95.8% एमएसएमई इकाईयों को है

मूल्य के अनुसार (रु राशि) **47.5%** का अंश है

सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक - ऋण परिमाण का सर्वाधिक अंश **(62.6%)**

निजी बैंक - ऋण मूल्य का सर्वाधिक अंश **(40.5%)**

निजी बैंकों द्वारा दिए गए ऋणों की संख्या (परिमाण अंश) का **94.8%** एमएसएमई इकाईयों को है

मूल्य के अनुसार (रु राशि) यह अंश **49.5%** है

दिसंबर 2020 तक, दिए गए कुल ऋणों में सावधि ऋणों का अंश 47% है, कार्यशील पूंजी ऋण का 40% है

सारिणी 1ए : उत्पाद संवर्ग और उधारदाताओं का अंश (मूल्य)

Lender Type	TL	WC	OTHERS	Total
Private Banks	22K Cr 13.74%	38K Cr 23.20%	6K Cr 3.61%	66K Cr 40.54%
Public Sector Banks	33K Cr 20.66%	15K Cr 9.50%	10K Cr 6.42%	59K Cr 36.59%
Foreign Banks	5K Cr 2.85%	8K Cr 4.85%	2K Cr 1.44%	15K Cr 9.14%
NBFCs	11K Cr 6.68%	2K Cr 1.15%	1K Cr 0.65%	14K Cr 8.47%
Grand Total	76K Cr 47.08%	65K Cr 40.08%	21K Cr 12.84%	162K Cr 100.00%

ऋणदाता प्रकार 'अन्य' मूल्य के आधार पर कुल क्रेडिट के 5% हिस्से के साथ इस विश्लेषण में प्रस्तुत नहीं किया गया है।

सारिणी 1 ए : उत्पाद संवर्ग और उधारदाता अपचारिता

अपचारिता

Lender Type	TL	WC	OTHERS	Grand Total
Private Banks	6.46%	3.86%	11.11%	5.38%
Public Sector Banks	34.89%	36.89%	15.47%	32.00%
Foreign Banks	2.85%	2.63%	0.86%	2.42%
NBFCs	10.87%	10.31%	22.90%	11.72%
Grand Total	21.18%	13.21%	12.87%	16.92%

यह प्रतिशत 90 या अधिक दिनों के विगत बकाया में अपचारिता राशि को दर्शाता है

स्रोत:सीआरआईएफ ब्यूरो, भारत

बिगड़ते 90+ दिनों के विगत बकाया का प्रदर्शन :

1) वित्त वर्ष 2016-17 तक सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा मध्यम और बड़े कॉरपोरेट्स और एमएसएमई उधारकर्ता वर्ग को दिए गए सावधि ऋण

2) एमएसएमई उधारकर्ता वर्ग के समूहों में दबाव के साथ-साथ वित्तीय वर्ष 2017-18 से दिए गए सावधि ऋणों का तुलनात्मक रूप से बेहतर प्रदर्शन

3) सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों द्वारा पिछले 3 वर्षों में उधारकर्ता घटकों में दिए गए कार्यशील पूंजी ऋण

मध्यम और बड़े कॉरपोरेट्स के लिए दबाव एमएसएमई घटक का 3 गुणा स्तर पर है और वित्त वर्ष 2019-20 में यह लगातार बिगड़ता जा रहा है।

वित्तीय वर्ष 17-18 से मंजूर ऋणों के लिए, क्षेत्र की अपचारिता 5.9% है और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक

कपड़ा एवं परिधान - उधारकर्ता परिदृश्य

कपड़ा एवं परिधान उद्योग में सभी आकार और प्रकार के व्यवसायीयों का विविध मिश्रण शामिल है।

उधारकर्ताओं की संख्या 5 लाख

सक्रिय ऋणधारी उधारकर्ता 3 लाख

परिमाण के अनुसार कुल ऋणों का 95% एमएसएमई उधारकर्ता घटक में केंद्रित है, मूल्य के अनुसार लगभग 50% है

सूक्ष्म घटक के उधारकर्ताओं ने परिमाण के अनुसार सबसे बड़ी हिस्सेदारी 76.7% पर बनाए रखी है

मूल्य के अनुसार एमएसएमई उधारकर्ता घटक की हिस्सेदारी 2 वर्षों में लगभग 6% बढ़ी है

कपड़ा एवं परिधान क्षेत्र में प्रोपराइटरशिप इकाइयाँ 66% अंश के साथ सर्वाधिक उधारकर्ता हैं

इस क्षेत्र में 60.5% ऋण प्रोपराईटर वर्ग के सूक्ष्म उधारकर्ताओं द्वारा लिए गए है इनकी 90+अपचारिता 9.97% रही है

सूक्ष्म और लघु संस्थाओं से बहुसंख्यक मांग के साथ साझेदारी और प्राइवेट लिमिटेड संस्थाएं वित्तपोषण की मात्रा का लगभग 24% हिस्सा हैं

90+ दिनों के बाद खराब प्रदर्शन के कारण:

1) वित्त 2017-18 तक दिए गए सावधि ऋण:
   a. पब्लिक लिमिटेड संस्थाएं जो सूक्ष्म घटक से हैं
   b. मिड कॉर्पोरेट जो प्रोपराईटरशिप संस्थाएं है

2) वित्त 2017-18 तक दिए गए कार्यशील पूंजी ऋण:
   a. बड़े कॉर्पोरेट जो साझेदारी संस्थाएं है
   b. सूक्ष्म घटक के उधारकर्ता जो पब्लिक लिमिटेड संस्थाएं है

3) वित्त 2017-18 में मिड कॉर्पोरेट को दिए गए कार्यशील पूंजी ऋण जो प्रोपराईटरशिप संस्थाएं है

सारिणी 2 : कपड़ा एवं परिधान - उधारकर्ता परिदृश्य

Borrower Segment	Proprietorship	Partnership	Private Limited	Public Limited	Grand Total
Micro	60.55% 9.97%	5.88% 7.85%	2.49% 10.84%	0.38% 49.67%	76.74% 10.76%
Small	4.68% 11.51%	4.16% 10.03%	3.46% 11.64%	0.29% 27.06%	13.20% 12.35%
Medium	0.72% 14.23%	1.33% 16.98%	3.03% 14.48%	0.33% 16.06%	5.49% 15.41%
Mid-Corporate	0.15% 46.02%	0.39% 21.26%	1.15% 10.03%	0.30% 11.46%	2.04% 12.33%
Large Corporate	0.06% 24.66%	0.29% 43.11%	1.29% 11.41%	0.83% 22.70%	2.53% 22.88%
Grand Total	66.16% 11.78%	12.06% 17.01%	11.43% 12.12%	2.13% 20.65%	100.00% 16.92%

First Percentage figure in the cell indicates the volume share (number of loans). Second percentage indicates the 90+ delinquency by value (Amount). The colored segments are based on the 90+ delinquency by value (amount).

स्रोत:सीआरआईएफ ब्यूरो, भारत

सारिणी 3: कपड़ा और वस्त्र - उधारकर्ता हिस्सों की अपचार प्रवृत्तियां

Borrower Segment	Dec-2018	Dec-2019	Dec-2020
Micro	20K Cr 9.91%	20K Cr 10.23%	18K Cr 10.76%
Small	32K Cr 10.19%	33K Cr 11.39%	30K Cr 12.35%
Medium	32K Cr 16.46%	34K Cr 18.35%	32K Cr 15.41%
Mid-Corporate	18K Cr 20.98%	21K Cr 15.44%	18K Cr 12.33%
Large Corporate	91K Cr 43.15%	94K Cr 36.58%	64K Cr 22.88%
Grand Total	193K Cr 27.72%	202K Cr 24.61%	162K Cr 16.92%

करोड़ में प्रदर्शित आंकड़ा इस खंड के बकाया संविभाग को दर्शाता है। प्रतिशत में प्रदर्शित आंकड़ा अवलोकन अवधि के अनुसार खंड के अपचार को इंगित करता है

स्रोत: सीआरआईएफ ब्यूरो, भारत

यथा दिसंबर 2020 तक, सूक्ष्म और लघु उधारकर्ता घटक के अपचार में पिछले वर्ष की तुलना में 0.53% और 0.96% की वृद्धि हुई है, जबकि मध्यम उधारकर्ता घटक, मध्य कॉर्पोरेट और बड़े कॉर्पोरेटों के लिए यह कम हो गए हैं।

भले ही 2 वर्षों की अवधि में 90+ दिनों की अपचारिता में 20% से अधिक की कमी दर्ज की गई है पर बड़े कॉरपोरेट उधारकर्ता अपने बहीखातों में अधिकतम दबाव का सामना कर रहें है।

मोटेतौर पर यह वित्त वर्ष 2016-17 तक बड़े कॉरपोरेट्स को दिए गए सावधि ऋणों के 90+ दिनों से देय भुगतान के खराब प्रदर्शन के कारण है, जबकि वित्त वर्ष 2016-17 के बाद दिए गए सावधि ऋणों में बहुत कम अपचार देखे गए हैं।

एमएसएमई उधारकर्ता घटकों की उधार प्रवृत्तियां

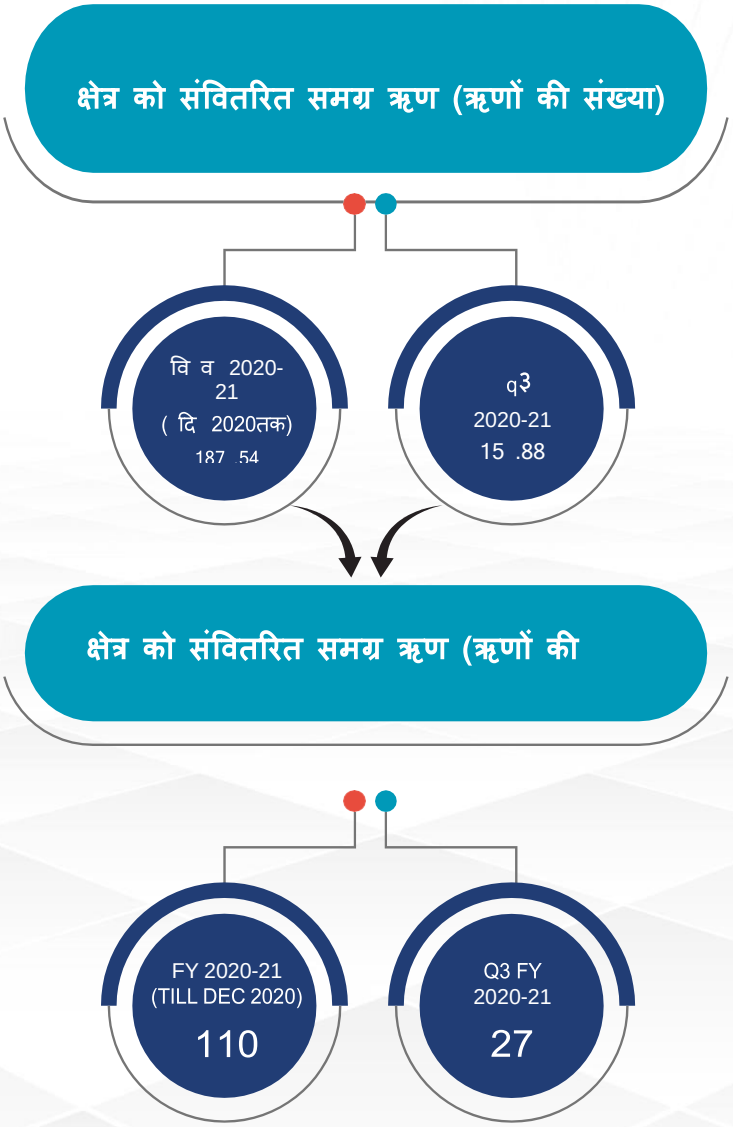

सारिणी 4a कपड़े एवं वस्त्र - उधारकर्ता हिस्सों (परिमाण) की अधिग्रहण प्रवृति

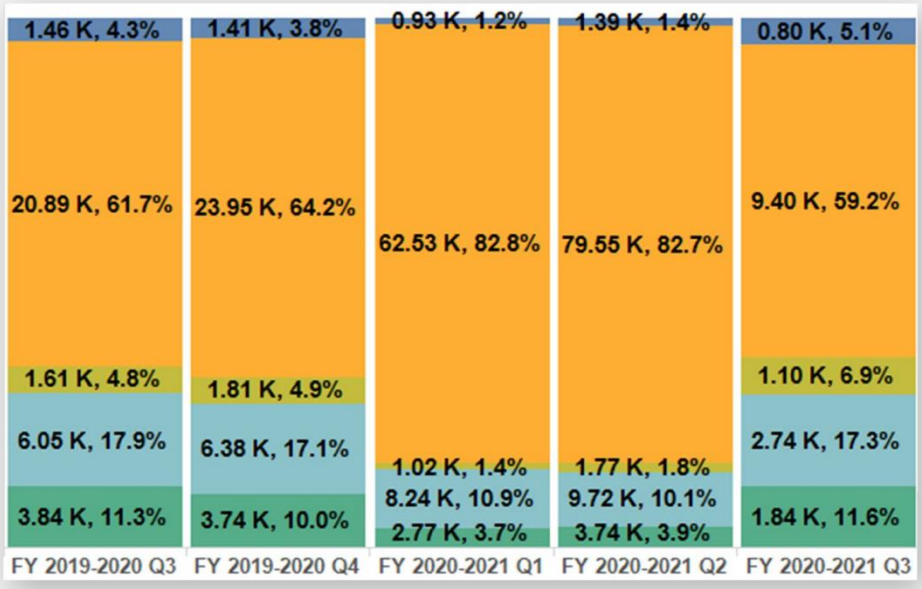

स्रोत सी आर आई एफ ब्यूरो, भारत

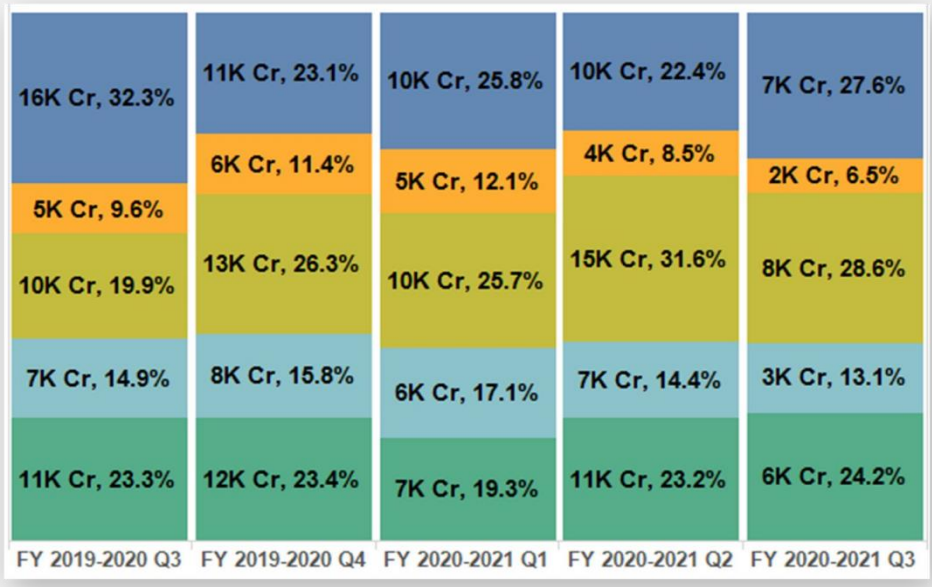

सारिणी 4बी कपड़े एवं वस्त्र

उधारकर्ताओं (मूल्य) द्वारा अधिग्रहण प्रवृतियाँ

वृहत निगम
अल्पवित्त
मध्यम नैगम
लघु
मध्यम

स्रोत सी आर आई एफ ब्यूरो, भारत

81%

वित्त वर्ष 2020-21 में संवितरण (मात्रा के अनुसार) में सूक्ष्म खंड के उधारकर्ताओं का हिस्सा (दिसंबर 2020 तक), कुल एमएसएमई के लिए 96%
आपातकाल द्वारा संचालित मई 2020 में घोषित क्रेडिट लाइन गारंटी योजना

61%

विवि 2019-20 (दिस.2020 तक) के पूरे वर्ष के लिए संवितरणों (परिमाण) के प्रति समस्त एमएसएमई इकाइयों में अल्पवित्त उधारकर्ताओं का हिस्सा 90% विव 2018-19 में 88% रहा था ,

46%

विवि 2020-21 (दिस.2020 तक) के संवितरणों (परिमाण) में अल्पवित्त उधारकर्ताओं का विव2019-20 में हिस्सा, 48% विव 2018-19 में 32% रहा था

59%

2020-21 की दूसरी तिमाही में अल्पवित्त उधारकर्ता के हिस्से के संवितरण भाग का परिमाण विव 2020-21 के दूसरी तिमाही की तुलना में 23% कम शेयर रहा

भारत के कपड़ा एवं वस्त्र क्षेत्र

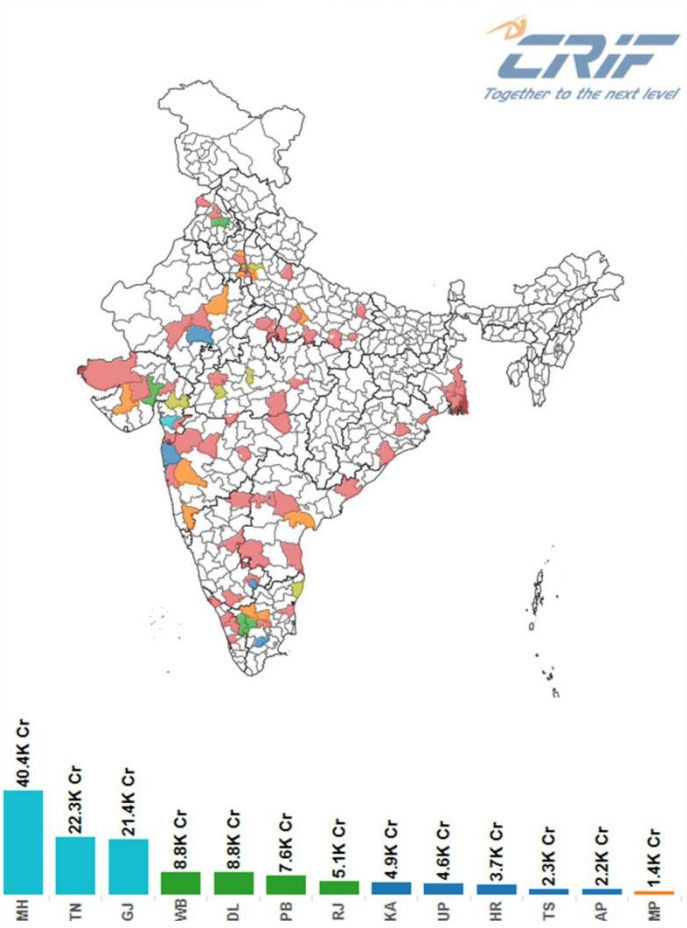

Source: CRIF Bureau, India

भारत में कपड़ा और वस्त्र उद्योग देश के कोने-कोने में फैला हुआ है। लगभग सभी राज्यों में कई ऋण सक्रिय इकाइयाँ हैं, जिनमें कपड़ा और वस्त्र निर्माण करने वाले जिले हैं। मुंबई और सूरत जैसे कुछ जिलों में दिसंबर 2020 तक> 10,000 करोड़ रुपये का ऋण संविभाग है।

97% क्षेत्रीय ऋण (INR राशि) शीर्ष राज्यों के कपड़ा और वस्त्र (तालिका 4 देखें) में समृद्ध शीर्ष 13 क्षेत्रों में केंद्रित है। (तालिका 4 देखें)

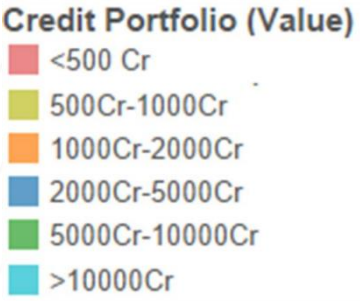

	Dec-20												
State	MH	TN	GJ	WB	DL	PB	RJ	KA	UP	HR	TS	AP	MP
Total Credit Active Units	>25000	>25000	>25000	10000-15000	10000-15000	10000-15000	5000-10000	5000-10000	5000-10000	5000-10000	<5000	<5000	<5000

शीर्ष 13 क्षेत्र में मूल्य के आधार पर क्षेत्रीय ऋण पोर्टफोलियो का हिस्सा (ऋण राशि)

80%

53%

शीर्ष 13 क्षेत्र में देश में उधारकर्ताओं की की क्रेडिट सक्रिय इकाइयां

शीर्ष 13 क्षेत्र में मूल्य (ऋण की राशि) द्वारा क्रेडिट पोर्टफोलियो का एमएसएमई हिस्सा

47%

25%

शीर्ष राज्य महाराष्ट्र में मूल्य के (ऋण की राशि) आधार पर क्षेत्रगत ऋण संविभाग का हिस्सा

सारिणी 5: वस्त्र एवं परिधान - शीर्ष क्षत्रोन की में तुलना Table 4: Textiles and Apparels – Comparison of Top Regions

Table 4

		December 2020												
		Mumbai Region	Tiruppur - Coimbatore - Madurai Region	Delhi-NCR	Surat Region	Ahmedabad Region	Kolkata Region	Ludhiana - Jalandhar - Amritsar Region	Jaipur - Bhilwara Region	Bengaluru - Mysore Region	Hyderabad - Guntur Region	Pune - Kolhapur Region	Kanpur Region	Chennai - Kancheepuram Region	Total
Overall	Portfolio Outstanding (Cr)	36.76K	20.76K	14.96K	11.77K	9.12K	8.77K	7.56K	5.13K	4.75K	4.01K	2.73K	1.73K	1.51K	129.56K
	Y-o-Y Change	-15.7%	-7.4%	-40.6%	-18.8%	-23.3%	-6.1%	-6.7%	-17.0%	-26.3%	-26.0%	-5.0%	-42.0%	-26.6%	-19.6%
	Delinquency 90+ %	13.74%	8.60%	21.35%	10.38%	8.24%	12.65%	28.79%	28.57%	19.71%	15.45%	31.80%	81.99%	42.61%	16.39%
	WC Utilization Ratio	60%	26%	28%	38%	48%	55%	70%	58%	8%	63%	58%	73%	38%	36%
	TL Utilization Ratio	57%	56%	57%	47%	54%	68%	54%	49%	74%	46%	58%	63%	62%	55%
MSME	Portfolio Outstanding (Cr)	9.77K	13.07K	7.37K	10.00K	4.32K	3.24K	3.38K	2.38K	2.05K	2.05K	1.61K	0.34K	1.15K	60.74K
	Y-o-Y Change	-6.5%	-0.1%	-8.3%	-12.7%	-11.9%	-13.2%	-8.3%	-8.4%	-11.8%	-10.5%	2.5%	-15.0%	-6.7%	-7.6%
	Delinquency 90+ %	16.21%	10.13%	12.26%	10.17%	10.53%	14.92%	24.94%	5.19%	9.65%	22.83%	15.35%	8.28%	23.60%	13.08%
	WC Utilization Ratio	53%	29%	43%	45%	52%	44%	56%	49%	45%	51%	45%	50%	39%	41%
	TL Utilization Ratio	49%	54%	54%	46%	54%	57%	55%	61%	67%	46%	58%	64%	67%	52%

स्रोत: सीआरआईएफबयूरो, इंडिया

सारिणी 6: शीर्ष वस्त्र और परिधान क्षेत्र - नियुजी व्यक्तियों की संख्या एवं वि व 2018-19 में हिस्सा

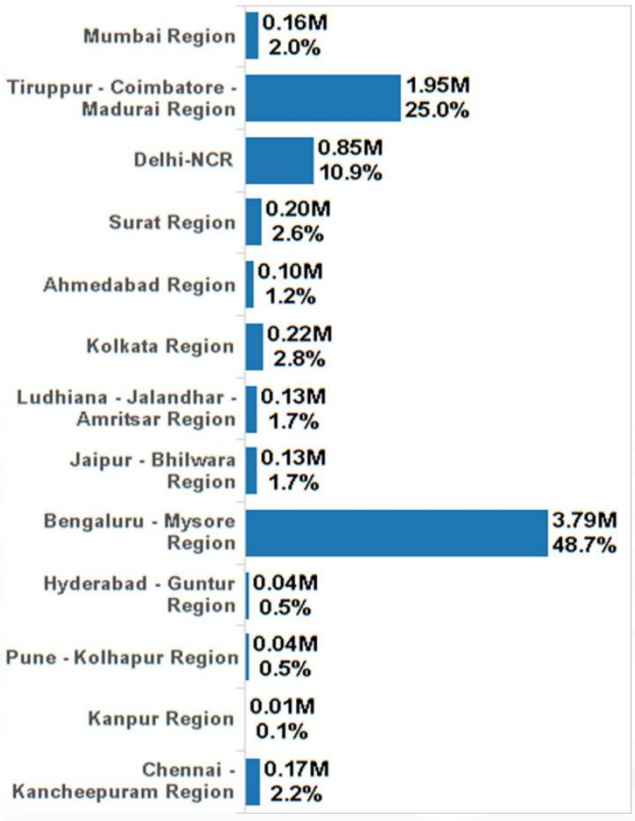

मुंबई क्षेत्र

ऋण मूल्य में सब से बड़ा

सूरत क्षेत्र

ऋण सक्रिय इकाइयों की अधिकतम संख्या

स्रोत: फ्रेम 2018-19, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण

निर्यात ऋण परिदृश्य

सारिणी 7ए: वस्त्र और परिधान - निर्यात (यूएसडी बीएन)

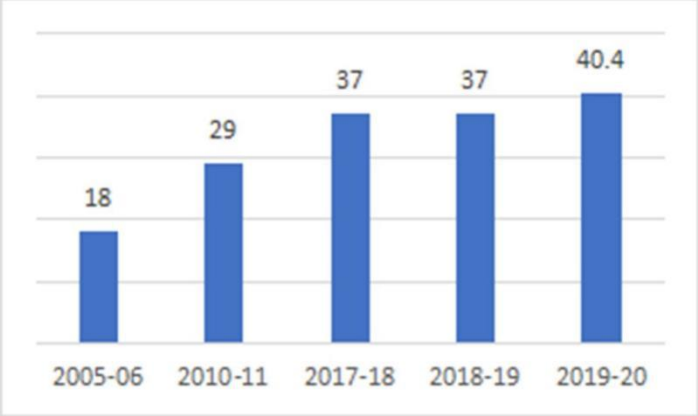

स्रोत: वस्त्र एवं परिधान उद्योग: भारत का परिवर्तन एजेंट, निवेश भारत

भारत विश्व स्तर पर वस्त्रों और परिधानों का 5वां सबसे बड़ा निर्यातक है।
इन वर्षों में, परिधानों ने अधिकांश निर्यात में योगदान दिया है, इसके बाद घरेलू वस्त्र और कपड़े का स्थान है।
भारत के शीर्ष 5 वस्त्र निर्यात गंतव्य यूएसए, बांग्लादेश, चीन, पाकिस्तान और यूके हैं।

सारिणी 7बी: वस्त्र और परिधान - निर्यात ऋण प्रवृतियाँ

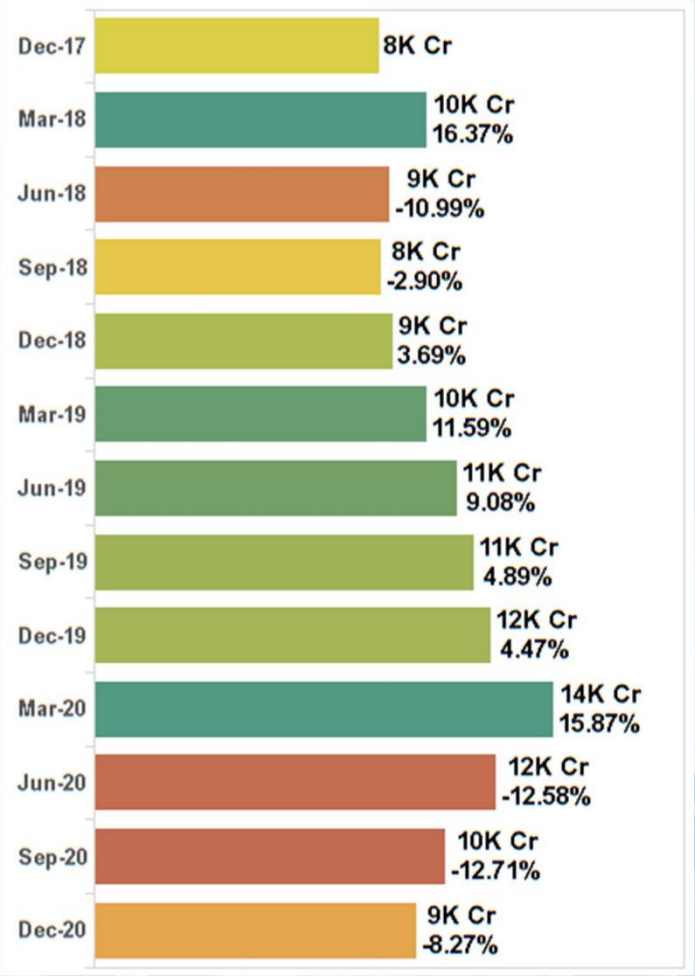

स्रोत: सीआरआईएफ ब्यूरो, इंडिया

निर्यात उत्पादों पर शुल्क और करों की छूट के लिए हाल ही में शुरू की गई योजना (आरओ डीटी ई पी) से अंतरराष्ट्रीय बाजारों में निर्यात उत्पादों की लागत प्रतिस्पर्धात्मकता लाने और कपड़ा और परिधान जैसे निर्यात-उन्मुख विनिर्माण क्षेत्रों में अधिक रोजगार के अवसर पैदा होने की उम्मीद है।

सेक्टर को निर्यात ऋण में वित्त वर्ष 2020-21 की सभी तिमाहियों में गिरावट देखी गई है, जो कोविड-19 लॉकडाउन और परिणामी मांग में गिरावट से प्रभावित है।

पिछले वर्ष की तुलना में, दिसंबर 2020 तक निर्यात ऋण 25% कम है, रु. 9के करोड़ पर, जिसका मुख्य कारण महामारी के कारण निर्यात में गिरावट है।

कपड़ा और परिधान उद्योग के लिए आगे का रास्ता

सारणी 8: निवेश और रोजगार (लाख में)
Chart 8: Investments and Employment (in Lakh)

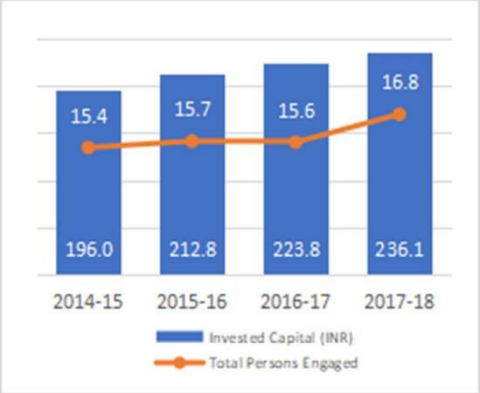

रोजगार सृजित करने वाले 5 शीर्ष राज्य

- कर्नाटक
- तमिल नाडू
- हरियाणा
- गुजरात t
- महाराष्ट्र

6.4 %
3- वर्ष सीएजीआर निवेश

2.9 %
3- वर्ष सीएजीआर निवेश

3- वर्ष सीएजीआर रोजगार
Employement

स्रोत : सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, भारत सरकार उद्योगों का वार्षिक सर्वेक्षण विव 2013-14 से विव 2017-18

भारतीय वस्त्र और परिधान उद्योग की विकास क्षमता और औद्योगिक उत्पादन, रोजगार सृजन और निर्यात आय में इसका वर्तमान योगदान, उद्योग के लिए एक आशाजनक भविष्य को चित्रित करता है। यह क्षेत्र देश भर में बड़ी संख्या में महिलाओं और ग्रामीण आबादी को रोजगार प्रदान करता है, जिससे मेक इन इंडिया, स्किल इंडिया, महिला सशक्तिकरण और ग्रामीण युवा रोजगार की सरकार की प्रमुख पहलों के अनुरूप अर्थव्यवस्था में योगदान होता है।

इस क्षेत्र का समर्थन करने और घरेलू विनिर्माण और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, सरकार ने स्वचालित मार्ग के माध्यम से 100% एफडीआई की अनुमति देने के अलावा, तकनीकी उन्नयन, जनशक्ति के कौशल और बुनियादी ढांचे के विकास के रूप में योजनाओं और पहलों की एक श्रृंखला शुरू की है। वस्त्र मंत्रालय भी एक नई वस्त्र नीति 2020 को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया में है जो निर्यात को बढ़ावा देने और रोजगार के अवसर पैदा करने में मदद करेगी।

.

तकनीकी वस्त्र: वस्त्रों का भविष्य वर्तमान में 19 अरब अमेरिकी डॉलर का है, जो 2023-24 तक बढ़कर 40 अरब अमेरिकी डॉलर होने का अनुमान है।

एक उभरता क्षेत्र, विकास को गति प्रदान कर रहा है, तकनीकी वस्त्र क्षेत्र कोविड-19 संकट के दौरान और भी अधिक प्रासंगिक हो गया है, देश को न केवल अपने स्वयं के मास्क और पीपीई का निर्माण करने के लिए बल्कि अन्य देशों को निर्यात करने के लिए भी प्रेरित कर रहा है। भारत दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा पीपीई निर्माता है जो लगभग 4.5 लाख पीपीई और एक दिन में 1.5 करोड़ से अधिक मास्क का उत्पादन करता है।

तकनीकी वस्त्रों की लागत-प्रभावशीलता, स्थायित्व, उपयोगकर्ता-मित्रता और पर्यावरण-मित्रता ने वैश्विक बाजार में इसकी मांग को बढ़ा दिया है।

स्रोत: वस्त्र एवं परिधान उद्योग: भारत का परिवर्तन एजेंट, निवेश भारत

हाल ही में, केंद्रीय बजट 2021 में, सरकार ने मेगा इन्वेस्टमेंट टेक्सटाइल पार्क (MITRA) की स्थापना का प्रस्ताव दिया है, जिसके तहत तीन साल की अवधि में सात टेक्सटाइल पार्क स्थापित किए जाएंगे - वस्त्र और परिधान क्षेत्र द्वारा स्वागत की गई एक योजना।

चूंकि इस क्षेत्र में बड़ी संख्या में लघु-स्तरीय इकाइयां हैं, इसलिए सरकार द्वारा मई 2020 में आत्मनिर्भर भारत के तहत घोषित विशेष आर्थिक पैकेज ने देश भर के बुनकरों और कारीगरों को लाभान्वित किया है और उन्हें कोविद -19 महामारी प्रेरित तनाव से निपटने में मदद की है। यह वित्त वर्ष 2019-20 के पूर्व महामारी तिमाही 4 की तुलना में इस वित्तीय वर्ष की पहली दो तिमाहियों में एमएसएमई उधारकर्ताओं द्वारा लिए गए ऋणों की हिस्सेदारी में लगभग 20% की वृद्धि से भी स्पष्ट है। आत्मनिर्भर भारत के लिए सरकार के आह्वान के बाद, सरकार वस्त्र और परिधान क्षेत्र के लिए उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना का विस्तार करने की भी योजना बना रही है।

कोरोनावायरस के प्रभाव और परिणामी लॉकडाउन के कारण, उद्योग को जमीनी स्तर पर चुनौतियों और बाधाओं का भी सामना करना पड़ा । तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश, हरियाणा और गुजरात में प्रमुख औद्योगिक समूहों में स्थित वस्त्र और परिधान इकाइयों के बीच सिडबी द्वारा प्रशासित एक संक्षिप्त सर्वेक्षण कराया गया जिसमें उसके गठन, कारोबार, संयंत्र और मशीनरी में निवेश, जन शक्ति, विनिर्माण गतिविधि के स्वरूप वाली इकाइयों का एक स्वस्थ मिश्रण किया गया । उक्त सर्वेक्षण से निम्नलिखित चुनौतियों पर प्रकाश डाला गया जिनका सामना एमएसएमई ने किया था और जिसे महामारी ने और बढ़ाया है:

1. विनिर्माण बहुसंख्यक छोटे उधारकर्ताओं वाली संस्थाएं और जिनके पास 50 से कम कर्मचारी हैं
2. 40% साझेदारी इकाइयां, 30% प्राइवेट लिमिटेड कंपनियां, 30% प्रोप्राइटरी इकाइयां
3. वित्त वर्ष 20 में 70% ने 5 करोड़ रुपये से कम कारोबार बताया, 30% ने रुपए 5-50 करोड़ बताया

वित्त

- एमएसएमई को ऋण पर उच्च ब्याज दर
- एमएसएमई के लिए नकदी प्रवाह/तरलता की कमी
- कार्यशील पूंजी की आवश्यकताओं को पूरा नहीं किया जा रहा है

नीति और प्रक्रियाएँ

- जीएसटी पोर्टल में चल रहे बदलाव और रिटर्न दाखिल करने से भ्रम की स्थिति पैदा होती है
- आरओडीटीईपी के तहत निर्यात लाभों में स्पष्टता का अभाव
- निर्यातकों के लिए IGST रिफंड एक प्रमुख बन चुनौती गया है

आधारभूत संरचना

- एमएसएमई के लिए औद्योगिक क्षेत्रों में अपर्याप्त बिजली और पानी की आपूर्ति
- ईंधन की कीमतों में लगातार वृद्धि से परिवहन और आवागमन उच्च लागत
- सड़कों की खराब गुणवत्ता, औद्योगिक क्षेत्रों में मूलभूत सुविधाओं का अभाव

आपूर्ति श्रृंखला

- धागे की कीमतों, कच्चे माल की कीमतों में वृद्धि, कपास की कीमतों में उतार-चढ़ाव
- कोविड - 19 के कारण अन्य देशों में लॉकडाउन, निर्यात में बाधा
- प्रवासी मजदूरों पर निर्भरता और लॉकडाउन के बाद अर्द्ध कुशल और अकुशल श्रमिकों की कमी

डीआरओसी वस्त्र एवं परिधान उद्योग

संचालक

कच्चे माल और मानवशक्ति की प्रचुर उपलब्धता।
बढ़ती आय, जनसंख्या और खुदरा और ऑनलाइन बाजारों के प्रति बढ़ती उपभोक्ता प्राथमिकताएं घरेलू मांग में वृद्धि के लिए शुभ संकेत हैं।
केंद्र और विभिन्न राज्य सरकारों से उदार वित्तीय सहायता और नीतिगत पहलों ने उत्पादन और निर्यात को बढ़ावा देने में सहायता की है।

अवरोध

वस्तुओं और सेवाओं की लागत में चौतरफा वृद्धि एक बड़ा झटका है, जो निष्पादन और ऑर्डरबुक की पूर्ति को प्रतिबंधित करती है ।
उच्च लागत वाले भौगोलिक क्षेत्रों से श्रम भागीदारी की संकेंद्रणता।
कोविड 19 महामारी के कारण तरलता की कमी ने आपूर्तिकर्ताओं को क्रेडिट अवधि को कम करने और खरीदारों को अधिक मांग करने के लिए प्रेरित किया है।

अवसर

तकनीकी वस्त्र बाजार में 3 वर्षों में 20% की वृद्धि हुई है, जो अपनी सूक्ष्मता को साबित करता है और भविष्य के विस्तार का मार्ग प्रशस्त करता है।/
भारत को दुनिया का सबसे तेजी से बढ़ते ई-कॉमर्स बाजार बनने की उम्मीद है।
एमएसएमई की नई परिभाषा से बड़ी संख्या में अतिरिक्त कपड़ा और परिधान निर्यातकों को ब्याज समकारी योजना के तहत 5% छूट का लाभ उठाने में मदद मिलती है।

चुनौतियाँ

विशेष रूप से बुनाई, रंगाई, प्रसंस्करण और परिधान खंड में कौशल अंतर 2028 में 26.2 मिलियन होने का अनुमान है।
क्षेत्र के निर्माण जीवन चक्र में पर्यावरण और व्यावसायिक खतरे क्षेत्र की लक्षित स्थिरता पहल के लिए एक चुनौती है।
निर्यात में घटना संचालित व्यवधान कपास किसानों, जिनर्स, कताई मिलों, वस्त्र निर्माताओं सहित संपूर्ण मूल्य श्रृंखला को प्रभावित करते हैं।

देश की अर्थव्यवस्था में कपड़ा और परिधान क्षेत्र का योगदान बहुत बड़ा रहा है। इस क्षेत्र में देश में उपलब्ध अधिशेष श्रम को अवशोषित करने की एक बड़ी क्षमता है। बदलती जीवनशैली, बढ़ते शहरीकरण और लोगों में फैशन के प्रति बढ़ती जागरूकता, आने वाले दशकों में इस क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए तैयार हैं।
इस समय, जब व्यवसाय और विनिर्माण गतिविधियाँ लॉकडाउन के बाद धीरे-धीरे सामान्य स्थिति को फिर से शुरू कर रही हैं, सरकार की मेक इन इंडिया और वोकल फॉर लोकल पहल और भी अधिक प्रासंगिक हैं, जिससे देश के 2025 तक $ 5 ट्रिलियन की अर्थव्यवस्था बनने का लक्ष्य है। वित्तीय सहायता के अलावा, सरकार और उद्योग निकायों द्वारा भारतीय वस्त्रों और परिधानों को समर्थन देने के लिए योजनाबद्ध और व्यवस्थित प्रयास उद्योग को आवश्यक प्रोत्साहन देंगे और इसके विकास के लिए विभिन्न बाधाओं को दूर करने में मदद करेंगे, जो अंततः आर्थिक समृद्धि की ओर ले जाएगा।

[8]मानव संसाधन एवं कौशल अंतर आवश्यकताएँ (2022), राष्ट्रीय कौशल विकास निगम, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार

[9] तकनीकी वस्त्र उद्योग का आधारभूत सर्वेक्षण, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

अस्वीकरण

इस रिपोर्ट में केवल समग्र स्तर की जानकारी है। इसमें कोई क्रेडिट जानकारी नहीं है और इसे क्रेडिट सूचना रिपोर्ट या उसके भाग के रूप में नहीं माना जाएगा। इस रिपोर्ट में विश्लेषण सीआरआईएफ हाई मार्क के डेटाबेस में क्रेडिट जानकारी पर आधारित है। परिणामों को "कानूनी विवरण" के रूप में नहीं माना जाना चाहिए या उनका उपयोग नहीं किया जाना चाहिए। सीआरआईएफ हाई मार्क अपने डेटा को सटीक और अद्यतित रखने का प्रयास करता है लेकिन इसकी सटीकता की गारंटी नहीं देता है। सीआरआईएफ हाई मार्क प्रदान किए गए डेटा में किसी भी त्रुटि, चूक, या अशुद्धि के लिए कोई दायित्व नहीं मानता है, भले ही इस तरह के या किसी भी निर्णय, की गई कार्रवाई, या उपयोगकर्ता द्वारा यहां प्रदान किए गए किसी भी डेटा पर निर्भरता के कारण की गई कार्रवाई के कारण की परवाह किए बिना। रिपोर्ट की सामग्री को सीआरआईएफ हाई मार्क क्रेडिट इन्फोर्मेशन सर्विसेस प्राइवेट लिमिटेड की अनुमति के बिना आंशिक या पूर्ण रूप से पुन: प्रस्तुत नहीं किया जाएगा। यहां व्यक्त विचार लेखक के हैं। इसलिए, इसकी सामग्री, हाई मार्क क्रेडिट और प्राप्तकर्ता(ओं) के बीच किसी भी प्रतिबद्धता का प्रतिनिधित्व नहीं करती है और उपरोक्त उल्लिखित सामग्री के लिए CRIF High Mark द्वारा कोई दायित्व या जिम्मेदारी स्वीकार नहीं की जाती है।

सीआरआईएफ इंडिया के बारे में:

भारत में सीआरआईएफ -आपकी ऋण से संबन्धित सभी अपेक्षाओं के लिए भागीदार।

भारत में सीआरआईएफ, ऋण सूचना, व्यवसाय सूचना, विश्लेषिकी, स्कोरिंग, ऋण प्रबंधन और निर्णय समाधान के लिए उत्पादों और सेवाओं की पेशकश करता है। सीआरआईएफ, सीआरआईएफ हाई मार्क, भारत के अग्रणी क्रेडिट ब्यूरो का संचालन करता है, जिसके पास व्यक्तिगत रिकॉर्ड का सबसे बड़ा डेटाबेस है और हर महीने लाखों उधार निर्णय की सहायता करता है। सीआरआईएफ हाई मार्क भारत का पहला पूर्ण-सेवा क्रेडिट ब्यूरो है जो सभी उधारकर्ता खंडों को कवर करता है - एमएसएमई / वाणिज्यिक, खुदरा और माइक्रोफाइनेंस। सीआरआईएफ हाई मार्क देश के सभी प्रमुख वित्तीय संस्थाओं के साथ काम करता है, जिससे उन्हें कम कीमत वाले डेटा के साथ भी काम करने के लिए सिद्ध किया गया है,जो अपने प्रोप्राइटरी, भारत में निर्मित इंडिया सर्च इंजन 'का उपयोग करते हैं। हम अपनी वैश्विक विशेषज्ञता को पुणे में अपने उत्कृष्टता केंद्र के माध्यम से भारत में विश्लेषिकी, स्कोरिंग, क्रेडिट प्रबंधन और निर्णय समाधान के लिए लाते हैं। विशेषज्ञ डेटा वैज्ञानिक और सांख्यिकीविदों की हमारी टीम वित्तीय सेवाओं, बीमा या दूरसंचार क्षेत्रों के लिए उत्पत्ति, विपणन और संग्रह के लिए बीस्पोक स्कोरकार्ड विकसित करने में वर्षों के अनुभव का उपयोग करती है।
हम अपने ग्राहकों के लिए सबसे अधिक मूल्य जोड़ने के लिए वैश्विक सर्वोत्तम प्रथाओं, स्कोरिंग में विशेषज्ञता और टॉप-रेटेड क्रेडिट प्रबंधन सॉफ्टवेयर समाधानों के साथ-साथ भारत के लिए व्यापक डेटा और परिष्कृत डेडअप तकनीक, दोनों को एक साथ लाते हैं

सिडबी के बारे में:

संसद के एक अधिनियम के तहत 1990 में भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक की स्थापना की गई है। सिडबी को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई सेक्टर) के संवर्द्धन, वित्तपोषण और विकास के तिहरे एजेंडे को क्रियान्वित करने और समान गतिविधियों में संलग्न विभिन्न संस्थानों के कार्यों के समन्वय हेतु प्रमुख वित्तीय संस्थान के रूप में कार्य करने का अधिदेश प्राप्त है। वर्षों से, अपने विभिन्न वित्तीय और विकासात्मक उपायों के माध्यम से, बैंक ने समाज के विभिन्न स्तरों पर लोगों के जीवन को स्पर्श किया है, पूरे एमएसएमई स्पेक्ट्रम पर उद्यमों को प्रभावित किया है और एमएसएमई पारितंत्र में कई विश्वसनीय संस्थानों के साथ काम किया है। विज़न 2.0 के तहत, सिडबी ने एमएसएमई क्षेत्र में सूचना विषमता को संबोधित करने के लिए विभिन्न पहल की है।